• कविताएं...

अंतरिक्ष की सैर

नभ के तारे कई देखकर
एक दिन बबलू बोला।
अंतरिक्ष की सैर करें मां
ले आ उड़न खटोला॥
कितने प्यारे लगते हैं
ये आसमान के तारे।
कौतूहल पैदा करते हैं
मन में रोज हमारे॥
झिलमिल झिलमिल करते रहते
हर दिन हमें इशारे।
रोज भेज देते हैं हम तक
किरणों के हरकारे॥
कोई ग्रह तो होगा ऐसा
जिस पर होगी बस्ती।
मां,बच्चों के साथ वहां
मैं खूब करूंगा मस्ती॥
वहां नये बच्चों से मिलकर
कितना सुख पाऊंगा।
नये खेल सिखूंगा मैं,
कुछ उनको सिखलाऊंगा॥

■ त्रिलोक सिंह ठकुरेला

अपना घर

मां, क्या हो सकता है ऐसा
जादू वाला घर हो अपना,
जहां धूप हो उसी दिशा में
घर का दरवाजा हो अपना?
हो न अंधेरा, रहे उजाला
जहां बना हो अपना घर,
मा, बतलाऊं सच्ची-सच्ची
मुझे रात को लगता डर।

■ प्रभाकिरण जैन

• जानकारी...

रहस्यमयी नदी

सदियों से सरस्वती नदी का भारत के इतिहास, पौराणिक कथाओं और वैज्ञानिक शोध में एक खास स्थान रहा है। प्राचीन वैदिक ग्रंथों में इसका बड़े पैमाने पर जिक्र मिलता है। ऐसा माना जाता है कि यह नदी कभी उत्तर पश्चिमी भारत में बहती थी और फिर धीरे-धीरे जमीन की सतह से गायब हो गई। आज कई शोधकर्ताओं का मानना है कि सरस्वती एक भूमिगत नदी प्रणाली के रूप में मौजूद है।

सरस्वती को अक्सर भारत की खोई हुई नदी कहा जाता है। हालांकि अब यह सतह पर एक बड़ी और दिखाई देने वाली नदी के रूप में मौजूद नहीं है, लेकिन कई वैज्ञानिक अध्ययनों में उत्तरी और पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों के नीचे प्राचीन दबे हुए नदी के रास्ते पाए गए हैं। शोधकर्ताओं का ऐसा मानना है कि हजारों साल पहले भूवैज्ञानिक बदलाव, नदी प्रणालियों में बदलाव और जलवायु संबंधी कारणों से इस नदी का रास्ता धीरे-धीरे बदल गया।

सरस्वती से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध जगह में से एक है प्रयागराज का त्रिवेणी संगम। यहां गंगा और यमुना नदियों का पानी दिखाई देता है, जबकि पारंपरिक रूप से माना जाता है कि सरस्वती जमीन के नीचे से अदृश्य रूप में उनसे मिलती है। आधुनिक सैटेलाइट मैपिंग और भूवैज्ञानिक अध्ययनों से इस इलाके के नीचे एक प्राचीन दबी हुई नदी का रास्ता पता चला है।

बद्रीनाथ के पास माना गांव के नजदीक लोग एक नदी देख सकते हैं, जिसे स्थानीय लोग सरस्वती कहते हैं। यह नदी हिमालय की पहाड़ियों से निकलती है और जोरदार बहाव के साथ बहती है। इसके बाद मशहूर भीम पुल के पास जमीन के नीचे गायब हो जाती है।

भू वैज्ञानिकों ने हरियाणा और पंजाब के मैदानी इलाकों में कई प्राचीन नदी के रास्ते खोजे हैं। कई शोधकर्ता घग्गर नदी को प्राचीन सरस्वती प्रणाली का सबसे करीबी बचा हुआ अवशेष मानते हैं। कुरुक्षेत्र और उसके आसपास किए गए अध्ययनों से जमीन के नीचे दबे हुए नदी तलों के सबूत मिले हैं।

थार रेगिस्तान के इलाके से उस खोई हुई नदी के बारे में काफी कुछ पता चलता है। जैसलमेर और थार रेगिस्तान के आसपास के इलाकों में वैज्ञानिकों को जमीन के नीचे मीठे पानी के काफी बड़े भंडार मिले हैं। सैटेलाइट तस्वीरों से रेगिस्तान की रेत के नीचे एक काफी बड़ी सूखी हुई नदी के रास्ते का पता चला है। काफी रिसर्च इन खोजों को प्राचीन सरस्वती नदी से जोड़कर देख रहे हैं।

• जातक कथा

बुद्धि का चमत्कार

''तेरे जैसे लोग इसी चक्कर में रहते हैं कि पकी-पकाई मिल जाए और खा लें। अरे भाई मेरे, अगर इन्सान में हिम्मत हौसला, ईमानदारी साहस और सूझबूझ हो तो वह पहाड़ को खोदकर नदी बहा दे। देख, तू वह मरा हुआ चूहा देख रहा है ना!''

रामवीर ने सड़क के किनारे पड़े एक मरे हुए चूहे की ओर इशारा किया।
''हां-देख रहा हूं।''
''आने-जाने वाले लोग भी उसे देख रहे हैं और घृणा से थूककर दूसरी ओर मुंह फेरकर निकल रहे हैं।''...

गतांक से आगे....

हम दोनों साथ-साथ ही राजदरबार की सेवा में आए थे, मगर तू तरक्की करके राजाजी का खजांची बन गया और मैं रहा सिपाही का सिपाही। इसे कहते हैं तकदीर।''

''तकदीर भी उन्हीं का साथ देती है गंगाराम, जो सूझबूझ और हिम्मत से काम लेते हैं। मैंने अपनी सूझबूझ से कुछ ऐसे काम किए कि महाराज का विश्वासपात्र बन गया और उन्होंने मेरी ईमानदारी देखकर मुझे खजांची बना दिया।''

''न-न भाई, तू जरूर किसी साधु या फकीर से कोई मन्तर-वन्तर पढ़वाकर लाया होगा जो इतनी जल्दी इतनी तरक्की कर ली। वरना मैं क्यों न किसी ऊंचे पद पर पहुंच गया? भइया, तू मुझे भी अपनी कामयाबी का राज बता।''

''तेरे जैसे लोग इसी चक्कर में रहते हैं कि पकी-पकाई मिल जाए और खा लें। अरे भाई मेरे, अगर इन्सान में हिम्मत हौसला, ईमानदारी साहस और सूझबूझ हो तो वह पहाड़ को खोदकर नदी बहा दे। देख, तू वह मरा हुआ चूहा देख रहा है ना!'' रामवीर ने सड़क के किनारे पड़े एक मरे हुए चूहे की ओर इशारा किया।

''हां-देख रहा हूं।''

''आने-जाने वाले लोग भी उसे देख रहे हैं और घृणा से थूककर दूसरी ओर मुंह फेरकर निकल रहे हैं।''

''रामवीर भाई! मैं तुझसे तेरी कामयाबी का रहस्य पूछ रहा था और तू मुझे मरा हुआ चूहा दिखा रहा है। ये क्या बात हुई?''

''गंगाराम! मैं तुझे कामयाबी की बाबत ही बता रहा हूं। सुन, लोग उस मरे हुए चूहे पर थूककर जा रहे हैं। मगर कोई सूझबूझ वाला इंसान इस मरे हुए चूहे से भी चार पैसे कमा लेगा। भइया मेरे, अक्ल का इस्तेमाल करने से ही इन्सान कामयाबी हासिल करता है। जन्तर-मन्तर से कुछ नहीं होता।''

''मैं समझ गया भाई रामवीर।'' निराश-सा होकर गंगाराम बोला-''तू मुझे अपनी कामयाबी का राज बताना ही नहीं चाहता। खैर, कभी तो मेरे भी दिन बदलेंगे। आ, अब चलते हैं।''

इस प्रकार वे दोनों राज कर्मचारी उठकर चले गए।

वे तो चले गए। मगर खजांची रामवीर की चूहे वाली बात ने सुन्दर के दिमाग में खलबली-सी मचा दी। उसके दिमाग में रामवीर की कही बात बार-बार गूंज रही थी-'लोग उस मरे हुए चूहे पर थूक-थूककर जा रहे हैं, मगर कोई सूझबूझ वाला इंसान इस मरे हुए चूहे से भी चार पैसे कमा लेगा...चार पैसा कमा लेगा...चार पैसे कमा लेगा।'

सुन्दर सोचने लगा-'खजांची की बात में दम है। जिस देश में मिट्टी भी बिकती हो, वहां कोई चीज बेचना मुश्किल नहीं-मगर इस मरे हुए चूहे को खरीदेगा कौन? कैसे कमाएगा कोई इससे चार पैसे?'

चूहे को घूरते हुए सुन्दर यही सोच रहा था, लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था।

तभी सड़क पर उसे एक तांगा आता दिखाई दिया। तांगे में एक सेठ बैठा था जिसने एक बिल्ली को अपनी गोद में दबोचा हुआ था। बिल्ली बार-बार उसकी पकड़ से छूटने की कोशिश कर रही थी।

अभी घोड़ा गाड़ी सुन्दर के आगे से गुजरी ही थी कि बिल्ली सेठ की गोद से कूदी और सड़क के किनारे की झाड़ियों में जा घुसी।

''अरे...अरे तांगे वाले, तांगा रोको। मेरी बिल्ली कूद गई।'' सेठ चिल्लाया।

तांगा रुका और सेठ उतरकर तेजी से झाड़ियों की तरफ लपका।

''अरे भाई तांगे वाले, देखो ! मेरी बिल्ली उन झाड़ियों में जा घुसी है। उसे पकड़ने में मेरी मदद करो।'' सेठ झाड़ियों के पास जाकर बिल्ली को बुलाने लगा-''आ...आ...पूसी..पूसी आओ।''

इसी बीच तांगे वाला और सुन्दर सहित कुछ अन्य लोग भी वहां जमा हो गए थे। -जारी

• चुटकुले...

यमराज : तुम्हारी जिंदगी का समय समाप्त हो गया है। बताओ, स्वर्ग जाओगे या नर्क?
शराबी : यमराज जी, पृथ्वी से जो 'क्वार्टर' लेकर आया था, वो तो रास्ते में ही खत्म हो गया। अब आप बस ये बताओ कि 'चखना' कहां अच्छा मिलेगा, मैं वहीं चलूंगा!

पत्नी : (रोमांटिक मूड में) अजी सुनते हो, शादी से पहले मेरा फिगर बिल्कुल 'कोका-कोला' की बोतल जैसा था!
पति : (प्यार से देखते हुए) हां भाग्यवान, तुम गलत नहीं कह रही हो।
पत्नी : (खुश होकर) सच में?
पति : हां, बस फर्क इतना है कि पहले वो बोतल कांच की थी... और अब '2 लीटर' वाली प्लास्टिक की है!

• रोचक...

फ्रिज

भारत में सदियों से मिट्टी के मटके को ही असली देसी फ्रिज के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। हमारे पूर्वज मिट्टी की मदद से पानी और अनाज को ठंडा रखते थे। दूसरी तरफ ईरान में मिट्टी की बड़ी-बड़ी गुंबददार इमारतें बनाई जाती थीं और यूरोप के अमीर लोग अपने घरों में खास तौर पर 'आइस हाउस' बनवाते थे, ताकि ठंडक को लंबे समय तक कैद रखा जा सके। इंसान के मन में मशीनों के जरिए ठंडक पैदा करने का पहला विचार 18वीं सदी में आया था। सबसे पहले स्कॉटिश प्रोफेसर विलियम कुलेन ने साल 1755 में एक छोटी सी मशीन का ढांचा तैयार किया था, जो आसपास की हवा को सोखकर बर्फ जमा देती थी। हालांकि, यह प्रयोग केवल लैब तक ही सीमित रहा। इसके बाद साल 1805 में अमेरिकी आविष्कारक ओलिवर इवांस ने भी बर्फ बनाने की एक मशीन पर काम किया, लेकिन इस तकनीक को असली कामयाबी साल 1834 में मिली जब अमेरिकी इंजीनियर जैकब पर्किंस ने पहली रेफ्रिजरेशन मशीन बनाकर उसका पेटेंट कराया।

• शाकाहार...

भारत में लगभग 27.6 करोड़ लोग पूरी तरह से शाकाहारी हैं। भारत में शाकाहार की जड़ें बेहद गहरी हैं और इसका सीधा संबंध हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म की प्राचीन परंपराओं से जुड़ा हुआ है। भारतीय व्यंजन दुनिया भर में शाकाहारी भोजन का सबसे शानदार नमूना पेश करते हैं। हमारे देश के रोजमर्रा के खान-पान में शामिल पनीर टिक्का, दाल मखनी, डोसा, पोहा और साधारण सब्जी-रोटी जैसे व्यंजन स्वाद और पोषण का बेजोड़ संगम हैं।